

प्रभु मिलन की मस्तियों में, झूमता मन गा रहा
पाना था जो पा लिया, अब और क्या बाकी रहा
प्रभु मिलन की मस्तियों में...

हो गया जब प्रभु ही अपना, कौन कोई ग़ैर है
सारी दुनिया अपनी है, अपना न किसी से वैर है
ज्ञान सागर, मन के गागर में समाता जा रहा
पाना था जो पा लिया, अब और क्या बाकी रहा
प्रभु मिलन की मस्तियों में...

मस्ती मौलाई में है, दौलत मिली प्रभु प्यार की
अब रही किस काम की, ये सल्तनत संसार की
ज़िंदगी जीने का, हमको है मज़ा अब आ रहा
पाना था जो पा लिया, अब और क्या बाकी रहा
प्रभु मिलन की मस्तियों में...

ऐसा साथी किसी का होगा, रहे सदा जो साथ में
भव से पार लगा दे नैया, स्वर्ग दे सौगात में
एक समंदर प्यार का है, आँखों में लहरा रहा
पाना था जो पा लिया, अब और क्या बाकी रहा
प्रभु मिलन की मस्तियों में...

प्रभु मिलन की मस्तियों में, झूमता मन गा रहा
पाना था जो पा लिया, अब और क्या बाकी रहा

सन्तुष्टमणियों का भाग्य दिल का गीत :

पाना था सो पा लिया





बहुत ढूंढने के बाद मिले हो मेरे बाबा..
अब आप को जो पा लिया है तो हमें
और कुछ भी नहीं चाहिए मीठे बाबा...
जो भी पाना था वो सब कुछ पा लीया है
मेरे प्राण बाबा...



आज बच्चों के याद और प्यार ने बापदादा को इस साकारी दुनिया में अपनी आकर्षण से बुला लिया। बापदादा भी बच्चों को साकारी दुनिया में साकार रूप में देख रहे हैं। चारों ओर के बच्चे भी बाप को देख रहे हैं और बाप भी v/s साकार स्वरूप में देख रहे हैं। और दिल में चारों ओर के बच्चों प्रति वाह! बच्चे, कल्प-कल्प के पात्र बच्चों को देख खुश हो रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य और प्राप्ति को देख मिलन मना रहे हैं। दिल ही दिल में हर बच्चे के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। हर बच्चे के चेहरे में चमकता हुआ भाग्य दिखाई दे रहा है। मस्तक में लाइट की प्राप्ति चमक रही है। हाथों में ज्ञान का भण्डार दिखाई दे रहा है। दिल में दिलाराम दिखाई दे रहा है। पांव में कदम



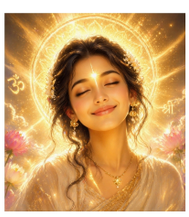





Points: Gold ज्ञान, Red = यो een = सेवा







में पदम दिखाई दे रहा है। ऐसा भाग्य देख हर एक का चेहरा चमक से चमक रहा है। सभी चारों ओर के बच्चे सन्तुष्ट स्वरूप दिखाई दे रहे हैं। ऐसे चेहरे चमकते हुए देख अन्य आत्मायें भी सोचती हैं इन्हों को क्या मिला है! तो आप क्या जवाब देंगे? जो पाना था वो पा लिया...। सब सन्तुष्ट मणियों के रूप में चमक रहे हैं। ऐसी अपनी मूर्त को आप भी देख रहे हो ना! बापदादा भी ऐसी सन्तुष्टमणि आत्माओं को देख क्या गीत गाते हैं! वाह मेरे सन्तुष्ट आत्मायें वाह !





तो आज सिर्फ बच्चों का दिल का उल्हना पूर्ण करने के लिए आये हैं। आप सभी का भी उल्हना तो पूरा हुआ ना! आगे जैसे ड्रामा निमित्त बनायेगा ऐसे मिलते रहेंगे। आज इतना ही ड्रामा में मिलन है।

किन शब्दों में आपका धन्यवाद करें
दिन रात की ये सेवा हम याद करे
किन शब्दों में आपका धन्यवाद करें

खिंचते हमारे प्यार में, अब तक भी आ रहे हो
रथ को संभालते भी, वादा निभा रहे हो
ऐसे ही प्यार पर जान, निसार हम करें

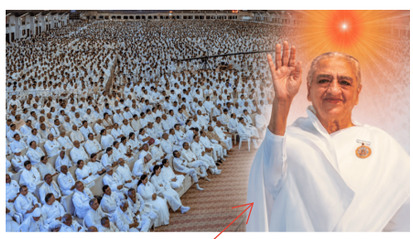

सभी बच्चों ने बहुत अच्छी रथ की सेवा की है। बापदादा सभी सेवा के निमित्त आत्माओं को विशेष मुबारक दे रहे हैं। अभी सिर्फ बच्चों का मिलने का उल्हना पूरा करने आये हैं। तो सभी ठीक है! ठीक हैं सभी हाथ उठाओ। रथ की भी सेवा करने वालों को



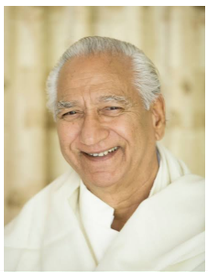



दिल की मुबारक है। चाहे कहाँ भी रथ को रहना पड़ा लेकिन बापदादा ने देखा गुजरात भी कम नहीं है। कहाँ हैं गुजरात के ! तो बापदादा और साथ में हमारे निमित्त बने हुए पाण्डव निर्वैर बच्चे ने भी बहुत साथ दिया। आओ। (सरला दीदी को) बहुत अच्छा किया। सभी दादियों को निमित्त बन सम्भालने के लिए आपको और आपके साथियों को बहुत-बहुत मुबारक हो।



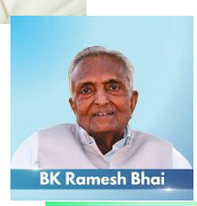



अभी बापदादा कमाल देखने चाहते हैं, कौन सी कमाल देखने चाहते हैं? परिवार की आप तीनों में बहुत उम्मीदें हैं। (निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई) अब बापदादा भी समझते हैं एक विचार कर अलग-अलग विचार तो होता ही है लेकिन **विचार को मिलाना, वह अपने हाथ में होता है**। तो बापदादा भी आप निमित्त बने हुए पाण्डवों में यह कमाल देखने चाहते हैं, विचार भिन्न-भिन्न होते हैं लेकिन मिलाना भी होता है। तो अभी तीनों यही कमाल दिखाना, तीन नहीं लेकिन तीनों एक हैं, बाकी तो सब अच्छे हैं, निमित्त होके चला रहे हैं। अच्छा।



lden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



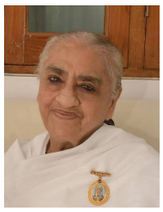

देश विदेश के भाई बहिनों को बहुत-बहुत मुबारक हो, जो दोनों ही निमित्त दादियों की सम्भाल बहुत अच्छी की है, उसकी विशेष मुबारक है। और सभी तरफ के भाई बहिनों को विशेष दिल की याद प्यार दे रहे हैं और सदा दिल में समाये हुए हैं इसलिए सदा याद में रहना और एक दो को याद दिलाते रहना। अच्छा।

आज तो सिर्फ जो सभी को संकल्प था, मिलना है, मिलना है, मिलना है। वह शरीर के हिसाब से पूरा हुआ। अब आगे जो ड्रामा में होगा मिलते रहेंगे। बापदादा बच्चों से कभी भी दूर नहीं रह सकते। जैसे बच्चे बाप से दूर नहीं रह सकते तो बाप भी बच्चों से दूर नहीं रह सकता। बापदादा सभी बच्चों को देख खुश है, मुबारक भी देते हैं कि **अभी हर एक समझे कि** मैं इस बेहद के कार्य के लिए सिर्फ स्वयं के लिए नहीं, स्वयं के साथ सेवा के भी निमित्त हूँ। अब ऐसी कमाल दिखाओ, दुनिया में हलचल और हलचल को अचल बनाने वाले निमित्त आप हो। वह अपना कार्य नहीं छोड़ते तो आप भी अपने को निमित्त समझ वह हलचल आप अचल, दोनों साथ-साथ पार्ट बजाओ।









Feel the Responsibility

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



अच्छा। आज सिर्फ मिलने आये थे।



चारों ओर के बच्चों को अपना-अपना कार्य करने की मुबारक भी हो और आगे के लिए हर एक विंग या हर एक ज़ोन आगे से आगे बढ़ते रहेंगे, यह बापदादा की मुबारक है।



डबल विदेशी: डबल विदेशी जो भी आये हैं, वह खड़े हो जाओ। बापदादा अभी डबल विदेशी नहीं कहते, डबल पुरुषार्थी क्योंकि डबल पुरुषार्थी अभी भी चारों ओर बढ़ रहे हैं, छोटे छोटे स्थानों में भी अटेन्शन दे रहे हैं इसलिए सेवा की भी मुबारक है और डबल पुरुषार्थ की भी मुबारक है। अभी डबल विदेशी नहीं कहो, डबल तीव्र पुरुषार्थी कहो। ठीक है। डबल पुरुषार्थी, डबल माना तीव्र पुरुषार्थी। तो बापदादा को याद है कि डबल पुरुषार्थी कहाँ-कहाँ से आये हैं, लेकिन सबसे दूर कौन है? सबसे दूर कौन हैं? अमेरिका वाले। वह भी इस दुनिया के हैं। लेकिन बापदादा कहाँ से आये हैं? बच्चों ने कहा और बाप

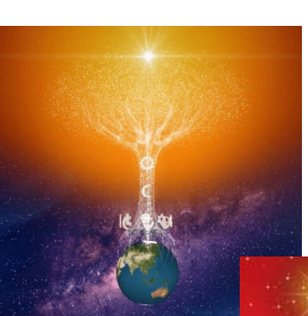





हाज़िर। चाहे शरीर का कुछ भी हो लेकिन बच्चे, बच्चे हैं। बाप सदा जी हाज़िर हो जाते हैं। अच्छा, चारों ओर के बहुत-बहुत अपना अच्छा पार्ट बजाने वाले ऐसे बाप ने कहा, बच्चों ने किया, ऐसे बच्चे सदा बाप के दिल में रहते हैं।

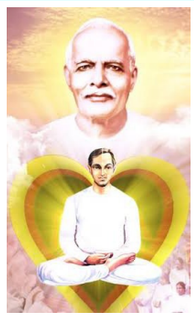

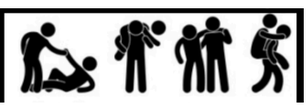

बापदादा बच्चों की कहानियां भी सुनते रहते हैं। कई बच्चे सिर्फ स्नेही नहीं हैं लेकिन स्नेही के साथ सहयोगी, हर कार्य में बनते हैं और अपना भविष्य जमा करने में होशियार हैं इसलिए देखो कितने देशों के आ गये हैं। बापदादा यह संगठन देख स्नेही सहयोगी हर कार्य में हाथ बढ़ाने वाला ग्रुप देख करके खुश हो रहे हैं। खुश है, आप भी खुश बाप भी खुश और परिवार भी खुश। मधुबन वाले तो कहते ही हैं कि डबल विदेशी मधुबन का श्रृंगार हैं और बाप का विश्व कल्याणी नाम विदेश ने सिद्ध किया है इसलिए सभी तीव्र पुरुषार्थी बनके रहना। पुरुषार्थी नहीं तीव्र पुरुषार्थी क्योंकि अभी समय है, सभी के लिए तीव्र पुरुषार्थी बनने का। पुरुषार्थ का समय अभी गया, अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। तो कभी भी साधारण पुरुषार्थी नहीं बनना। सदा चेक करना,





अभी नहीं तो कभी नहीं



तीव्रता है? साधारण तो नहीं हो गया! वैसे अभी समय भी सूचना दे रहा है - तीव्र पुरुषार्थी बनने का। तो बापदादा खुश है, परिवार भी खुश है और सबको मुबारक दे रहे हैं। खुशी है बाप को। कितने देशों से देखो इकट्ठे हुए हैं। अच्छा।



पिछली मुरली का शेष भाग - 5-3-12

Are you ready?



बापदादा ने पहले भी कहा है **अब समय नाजुक आया कि आया** इसलिए अभी कम से कम सम्पर्क वालों को यज्ञ स्नेही तो बनाओ। डाक्टर्स का भी समाचार सुना। अच्छा कर रहे हैं।



लेकिन अभी डाक्टर्स और भी अपने डाक्टर्स की संख्या को स्नेही सहयोगी बनाते जाओ। प्लैन अच्छा बनाया है, बापदादा ने सुना है। उससे वृद्धि हो सकती है। नाम फैल सकता है और दूसरी विंग वालों ने भी चारों ओर जो वी. आई. पी निकाले हैं उससे सिद्ध होता है कि कनेक्शन अच्छे रखे हैं। **अब कनेक्शन वालों को सम्बन्ध में लाओ। रह नहीं जावे।** समय





समाप्ति का आवे और सहयोगी के सहयोगी रह जायें, इसलिए अब सम्बन्ध में लाओ। समीप सम्बन्ध में लाओ। बापदादा ने देखा कि जब से वर्ग बने हैं, तब से सेवा चारों ओर अच्छी फैली है। साधन अच्छा बनाते हैं लेकिन बापदादा सभी ज़ोन को भी कहते हैं अभी वारिस बनाने की विधि को थोडा और तीव्र करो। नहीं तो उल्हना मिलेगा। हम सहयोगी रह गये। आप प्लैन जरूर बनाओ फिर जिसका जो भाग्य होगा। और निकल सकते हैं, बापदादा ने लिस्ट देखी सभी अपने-अपने समय पर लिस्ट देते हैं तो लिस्ट अनुसार समीप हैं, इनमें से निकल सकते हैं। अभी यह कोशिश करो।





कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥
तेरा कर्म करनेमें ही अधिकार है, उसके फलोंमें कभी नहीं। इसलिये तू कर्मोंके फलका हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करनेमें भी आसक्ति न हो॥ ४७॥



For New commers

अच्छा। पहली बार आने वालों को डबल मुबारक दे रहे हैं, क्यों? क्यों डबल मुबारक दे रहे हैं? क्योंकि **समय के हाहाकार के पहले अपना भाग्य बना दिया।** अहो प्रभु, अहो प्रभु कहने के बजाए मेरा बाबा तो कहा इसलिए बापदादा आने वालों को देख खुश है। बच्चे आ गये, आ गये, आ गये। देखो आधा क्लास तो पहले बारी का है। अभी तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। पुरुषार्थी नहीं बनना तीव्र पुरुषार्थी







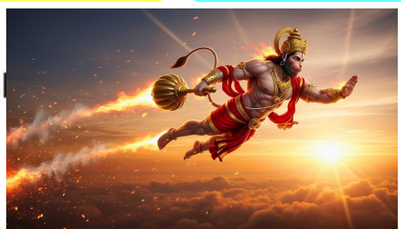

Here is the Fault



बनना। अभी भी अगर तीव्र पुरुषार्थ किया तो तीव्र पुरुषार्थ से आगे बढ़ सकते हो। मार्जिन तीव्र पुरुषार्थ की है। साधारण पुरुषार्थ का टाइम गया और बापदादा हर एक आने वाले बच्चों को चक्र लगाते देखते हैं, कि बच्चे आगे बढ़ रहे हैं या ढीले आगे बढ़ रहे हैं। बापदादा चक्र चारों ओर लगाते हैं। आप तो चारों ओर नहीं जा सकते लेकिन बापदादा तो रोज़ चक्र लगाते हैं। बाबा के साथ जो आपके एडवांस पार्टी के विशेष गये हैं ना, वह भी बापदादा के साथ चक्र पर निकलते हैं। आप लोगों को देख करके खुश होते हैं हमारे भाई, हमारी बहन आ गये, आ गये इसलिए आगे बढ़ते चलो, सारे परिवार की आपको मुबारक है। अच्छा।











आज मधुबन वालों को विशेष बापदादा एक बात की मुबारक दे रहे हैं। कौन सी बात? सभी ने अभी तक सेवा बहुत अच्छी प्यार से की है। कितना भी बड़ा परिवार आया लेकिन सेवा में निमित्त तो मधुबन वाले बनते हैं। चाहे हर ज़ोन सहयोगी बनते हैं लेकिन फिर भी जो परमानेंट रहते हैं उनके सहयोग के बिना तो नहीं कर सकते इसलिए एक-एक मधुबन वासी सिर्फ



नीचे वाले नहीं, ऊपर वाले भी, हॉस्पिटल भी, जिन्होंने भी सहयोग दिया है, और अथक बनके सहयोग दे रहे हैं, इसीलिए एक-एक बच्चा अपने नाम से बापदादा का यादप्यार स्वीकार करना। अच्छा। जो मधुबन वाले हैं वह उठो, जो भी बैठे हैं यहाँ। तो खास मुबारक हो।



वर्गीकरण की सेवाओं के बारे में: बापदादा ने देखा जो भी वर्ग बने हैं वह अपने अपने क्षेत्र में कार्य अच्छा कर रहे हैं। बापदादा मुबारक दे रहे हैं कि अच्छे-अच्छे सम्बन्ध-सम्पर्क में आये हैं। लेकिन बापदादा ने समय के प्रमाण आज यह भी कहा कि सहयोगी हैं लेकिन अब यज्ञ स्नेही बनाओ, वारिस क्वालिटी बनाओ। जो भी सहयोगी हैं उन्हों को अपने ज़ोन में, बापदादा ने पहले भी कहा है लिस्ट तो आई है अच्छा है लेकिन हर एक ज़ोन एक-एक वर्ग को अपने भिन्न-भिन्न स्थान के सहयोगी या स्नेही आत्माओं को **तीन दिन के लिए इकट्ठा करो**। उनको सम्पर्क में लाओ, रहें, मीटिंग करें और आगे के प्रोग्राम बनायें। तो हर ज़ोन जहाँ भी उनके हैं, सभी ज़ोन से कोई बड़े स्थान पर जहाँ भी ज़ोन में हो,

सहयोगियों को इकट्ठा करके उनकी मीटिंग करो और उन्हों में विशेष एक बल भरो और आगे बढ़ने का। जो अब तक किया उसकी मुबारक दो और आगे बढ़ने का प्लैन बनाके दो क्योंकि उन्हों को भी आगे बढ़ने की विधि सुनानी पड़ेगी। तो सभी ज़ोन मिलके एक-एक वर्ग का जहाँ विशेष स्थान है वहाँ इकट्ठा करो। फिर देखेंगे उस संगठन में कितने आते हैं, क्या आगे चाहते हैं? ऐसे सम्पर्क में लायेंगे तो वारिस बन जायेंगे।

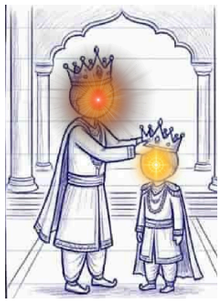



Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result



वरदानः सदा साथ के अनुभव द्वारा मेहनत की अविद्या करने वाले अतीन्द्रिय सुख वा आनंद स्वरूप भव



Finale Achievement



जैसे बच्चा अगर बाप की गोदी में है तो उसे थकावट नहीं होती। अपने पांव से चले तो थकेगा भी, रोयेगा भी।





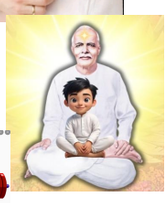



यहाँ भी आप बच्चे बाप की गोदी में बैठे हुए चल रहे हो। जरा भी मेहनत वा मुश्किल का अनुभव नहीं। संगमयुग पर जो ऐसे सदा साथ रहने वाली आत्मायें हैं उनके लिए मेहनत अविद्या मात्रम् होती है।





पुरूषार्थ भी एक नेचरल कर्म हो जाता है, इसलिए सदा अतीन्द्रिय सुख वा आनंद स्वरूप स्वत:बन जाते हैं।

Automatic





स्लोगनः- रूहे गुलाब बन अपनी रूहानी वृत्ति से वायुमण्डल में रूहानियत की खुशबू फैलाओ।



ज्ञान



= सेवा

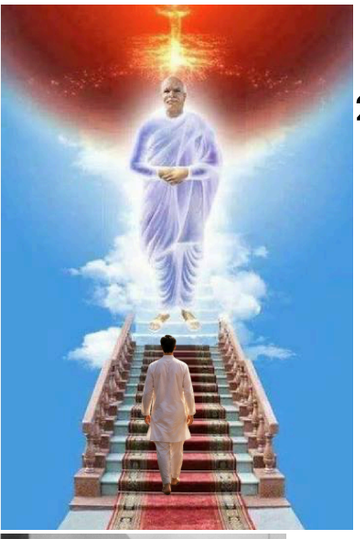

ये अव्यक्त इशारे –

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो



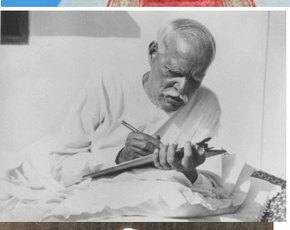



जैसे ब्रह्मा बाप सदा अशरीरी स्थिति में रह, शरीर का आधार लेकर कर्म किया फिर न्यारे हो गये। इसी प्रैक्टिस से वे कर्मातीत बने।

आप बच्चे भी कर्म करते भी ऐसा अनुभव करो जैसे कोई वस्त्र धारण कर कार्य रहे हैं। कार्य पूरा हुआ और वस्त्र से न्यारे हुए। शरीर और आत्मा दोनों का न्यारापन चलते-फिरते भी अनुभव हो।





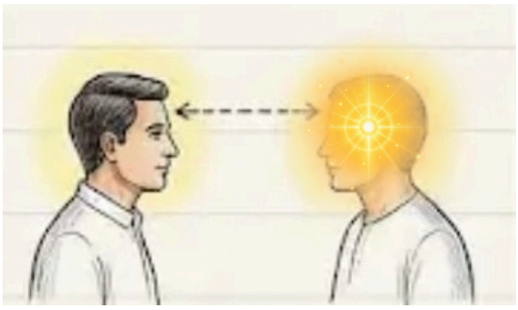

If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

Mind Mapping is Available Here

All वरदान slogans Oct 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Oct 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अगर आप को Mind Maps के रिलेटेड कोई Feedback या Suggestion भेजना है तो Click



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

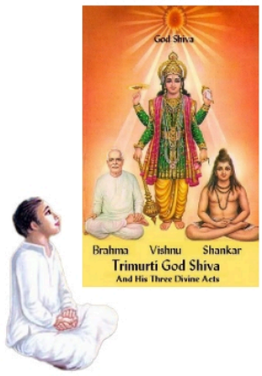

12.3.4. त्रिमूर्ति के चित्र को देखो :

कमरे में त्रिमूर्ति का चित्र लगा हुआ हो, तो घड़ी-घड़ी नज़र सामने पड़ेगी। बाबा द्वारा हम इस सूर्यवंशी घराने में जायेंगे। सवेरे उठते ही नज़र उस पर जायेगी, यह भी एक पुरुषार्थ है। बाबा राय देते हैं — अच्छे-अच्छे भगत पुरुषार्थ करते हैं, आँख खोलने से ही कृष्ण याद आ जाये। इसलिए चित्र सामने रख देते हैं। तुम्हारे लिए तो और ही सहज है। अगर सहज याद नहीं आती, माया हैरान करती है तो यह चित्र मदद करेंगे। शिव बाबा हमको ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी का मालिक बनाते हैं। हम बाबा से विश्व का मालिक बन रहे हैं। इस सिमरण में रहने से भी मदद बहुत मिलेगी। जो बच्चे समझते हैं याद घड़ी-घड़ी भूल जाती है, तो बाबा राय देते हैं कि चित्र सामने रख दो, तो बाप भी और वर्सा भी याद आयेगा।

12.3.5. बाप की महिमा इतना प्यार से करो कि प्रेम के आँसू आ जायें :

M.M.M.....imp.

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

अर्थात्:-
बड़ी बड़ी किताबे पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रुप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

- कबीर

बाबा कहते देही-अभिमानी बन, बाप को याद करो। बाबा की महिमा करो। बाप से जितना प्रीत-बुद्धि होंगे, उतना ऊँच पद पायेंगे। सवेरे उठ कर बहुत प्यार से बाप को याद करना है। भल, प्रेम के आँसू भी आयें क्योंकि बहुत समय के बाद बाप आकर मिले हैं। बाबा आप आकर हमें दु:खों से छुड़ाते हो!





AmritVe